ISSN: 2349-4654, UGC: 1340-48783
नाद-नर्तन जर्नल ऑफ डांस एण्ड म्यूज़िक
वर्ष : 6, सेमिनार विशेषांक, जनवरी 2018

पंजाबी लोकगाथा के साथ बजने वाले वाद्य तुम्बी का विलुप्तीकरण

महिन्द्र कौर

शोधार्थी, संगीत विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक

सार-संक्षेप

तुम्बी पंजाब का अत्यन्त प्रसिद्ध तंत्री लोकवाद्य है जिसका प्रयोग पंजाब के लोकसंगीत में किया जाता हैं तुम्बी वाद्य का स्वरूप प्राचीन कालीन वाद्य एकतारा तथा पाकिस्तानी वाद्य किंग से काफी मिलता जुलता है। समय-समय पर इन वाद्यों में संशोधन करके कई वाद्य बनाए जाते रहें हैं जिनमें पंजाब का लोक वाद्य तुम्बी इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है। तुम्बी वाद्य के तुम्बे का आकार किंग तथा एकतारा वाद्य से छोटा है एवं किंग वाद्य में तुम्बी वाद्य की अपेक्षा तारो की संख्या दो होती है। तुम्बी वाद्य का जन्मदाता पंजाबी लोक गायक 'उस्ताद लाल चन्द यमलाजट्ट' को कहा जाता है। तुम्बी वाद्य के अविष्कार सम्बन्धी उनका यह कहना था कि मैंने एक तार पर सात स्वर निकालने का तर्जुबा किया था और उस समय कार्यक्रम की प्रस्तुति के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान तक पैदल यात्रा करनी पड़ती थी जिसके चलते सारंगी जैसे भारी वाद्य को कंधों पर उठाकर ले जाना अत्यन्त कठिन होता था फलस्वरूप उन्हें एक ऐसे वाद्य की आवश्यकता महसूस हुई जिसे बिना किसी कठिनाई के सुविधापूर्वक कंधे पर लटका ले जाया जा सके तब लाल चन्द जी के द्वारा एकतारा वाद्य में संशोधन करके तुम्बी वाद्य का अविष्कार किया गया। उनका कहना था कि यह सुनकर अति प्रसन्नता होती है कि मुझे तुम्बी वाद्य का जन्म दाता कहा जाता है। प्रस्तुत शोध-पत्र में इस वाद्य की लोकप्रियता के शिखर तथा विलुप्तीकरण के कारणों का स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है।

मुख्य शब्द : तुम्बी, लोक संगीत, पंजाब, वाद्य, कड़वा कद्दू

शोध-पत्र

पंजाब में तुम्बी वाद्य को प्रसिद्ध करने का श्रेय 'लालचन्द यमला जट्ट' जी को ही जाता है।[1]

तुम्बी की बनावट

तुम्बी एक साधारण बनावट का वाद्य है यह आमतौर पर कड़वे कद्दू को खोखला करके बनाया जाता है कई तुम्बी-निर्माता कद्दू के स्थान पर बेल का प्रयोग भी करते है परन्तु ज्यादतर कद्दू का ही प्रयोग किया जाता है। कद्दू के ऊपर बकरे की पतली खाल मढ़ दी जाती है। कद्दू के ऊपर मढ़ी हुई खाल पर एक बाँस का या लकड़ी का टुकड़ा रखा जाता है। जिसके ऊपर तार टिकाई जाती है। तुम्बी के लिए प्रयोग किए जाने वाले डंडे की लम्बाई 21 इंच के डंडे का प्रयोग करते है। डंडे की ऊपरी भाग में लकड़ी की खुंटी लगाई जाती है जिस पर तार को बांधा जाता है। खुंटी के साथ तार को कस कर अपनी इच्छानुसार मिला लिया जाता है। तुम्बी के लिए आमतौर पर 0 नम्बर एवम 3 नम्बर की लोहे की तार का प्रयोग किया जाता है।[2] उपरोक्त विषय पर 'श्री अमर नाथ जी अमर (शिष्य उ. लाल चन्द यमला जट्ट)' से विचार-विमर्श करने पर कुछ नए तथ्य प्राप्त हुए उन्होंने बताया कि तुम्बी के निर्माण के लिए उनके द्वारा कद्दू के स्थान पर नारियल एवं गेंद का भी प्रयोग किया जाता है। कद्दू के चमड़े के ऊपर रखी जाने वाली लड़की जिसे घोड़ी कहते है के स्थान पर प्लास्टिक के टुकड़े का प्रयोग उनके द्वारा किया जाता है। जिससे तुम्बी की आवाज में अन्तर आता है एवं तुम्बी में प्रयोग की जाने वाली लोहे की तारों के स्थान पर स्टील की तारो का प्रयोग करते है छोटी तुम्बी के लिए (0) जीरों नम्बर के तार का तथा बड़ी तुम्बी के लिए एक (1) तथा दो (2) नम्बर की तार का प्रयोग किया जाता है। वे स्वयम तुम्बी निर्माता होने के साथ-साथ बहुत अच्छे तुम्बी वादक एवं गायक भी है।[3]

वादन शैली:-

तुम्बी का वादन दाएँ हाथ की तर्जनी उँगली से तारों को आघात करते हुए स्वर उत्पन्न किया जाता है और दूसरे हाथ से तार को दबाकर स्वर उत्पन्न किए जाते है। तुम्बी की विशेषता यह कि इसे ऊचे स्वर में मिलाया जाता है। कई गायक आजकल इसे बजाने के लिए दाएँ हाथ की तर्जनी उंगली में मिजराब का प्रयोग भी करते हैं। तुम्बी की टंकार द्वारा तय की गई लय ताल निर्माण में सहायक है जो सुरों से सम्बन्धित धुन

को निर्मित करती है। तुम्बी का स्पष्ट एवं ऊँचा नाद लोक धुनों को स्पष्ट रूप में निकालने में सहायक है। तेज लय वाली धुनें इस वाद्य पर बाखूबी बजाई जा सकती है। परन्तु मध्य लय वाली धुनें इस वाद्य के वादक के लिए लय में प्रवीणता की परीक्षा के समान है। यह वाद्य ज्यादातर सहायक वाद्य न होकर कलाकार गायक के मुख्य वाद्य के रूप में प्रयोग किया जाता है। तुम्बी वाद्य के साथ गायन को स्वर में निपुण गायक ही सफलतापूर्वक निभा सकते है।[4]

तुम्बी के विलुप्त होने के कारण:-

वर्तमान समय में तुम्बी वाद्य की लोकप्रियता अत्यधिक कम हो गई है जिसके कारण धीरे-धीरे यह वाद्य विलुप्त होने की कगार पर है। लेखक द्वारा इस वाद्य के विलुप्तीकरण सम्बन्धी कारणों के सर्वेक्षण स्वरूप प्राप्त तथ्यों में प्रमुख तथ्य है—पश्चिमी-धुनों का बढ़ता हुआ प्रभाव जिससे पंजाबी लोक-संगीत की गायन-शैलियों एवं लोक-वाद्यों के अस्तित्व को खत्म कर दिया है। लोक-वाद्यों का स्थान इलैक्ट्रिक वाद्य की बोर्ड, सिन्थेसाइजर तथा गिटार ने ले लिया है, और इसका प्रत्यक्ष उदाहरण हमारी युवा पीढ़ी पर देखने को मिलता है। गिटार वाद्य के प्रति आज की युवा पीढ़ी की बढ़ती लोकप्रियता तुम्बी वाद्य के प्रति उनकी अरूचि का स्पष्ट प्रमाण है। दूसरा कारण है आज का युग वैज्ञानिक एवं ग्लोबलाईजेशन का युग हैं हर कार्य को व्यवसायीकरण के रूप में अपनाया जा रहा हैं जिसमें संगीत भी रूचि का विषय न रहकर अब केवल व्यवसायीकरण तक सीमित हो गया है। उसी प्रकार तुम्बी वाद्य का प्रयोग केवल अब रिकार्डिग तक सीमित होकर रह गया है। अगर कोई कलाकार तुम्बी वाद्य को अपनाता भी है तो सिर्फ व्यवसाय के लिए परन्तु व्यवसाय के रूप में भी तुम्बी का प्रयोग धीरे-धीरे खत्म हो गया है। आधुनिकीकरण के इस युग में रिकार्डिग के समय इस वाद्य के पहले से प्राप्त लूप का प्रयोग किया जाता है। जिसके फलस्वरूप 'तुम्बी वाद्य' का अस्तित्व खत्म होता जा रहा है।

तीसरा कारण जो श्री हरिन्दर पतंगा (शिष्य उस्ताद यमला जट्ट) जी से बातचीत के दौरान सामने आया वह यह कि आज के युवा मेहनत नहीं करना चाहते और कोई भी वाद्य हो उसके सीखने में उसमें महारत हासिल करने में समय लगता हैं परन्तु आजकल के इस भागदौड़ के युग में किसी के पास इतना समय नहीं है कि घंटों बैठकर इस वाद्य पर रियाज किया जाए और उस पर प्रत्यक्ष सात-स्वर निकाले जाए। उनके द्वारा बताया गया कि आज 'पॉप संगीत' का युग है और आज की युवा पीढ़ी द्वारा उसी संगीत को तथा उसी प्रकार के साजों को पसंद किया जाता है। पॉप संगीत ने लोकसंगीत को खत्म कर दिया है, और लोक-साजों का स्थान भी इल्कट्रैकि वाद्यों ने ले लिया है। उन्होंने बताया कि एक युग था जब उ. यमला चन्द जट्ट जी ने 'तुम्बी वाद्य' को घर-घर में प्रसिद्ध कर दिया था और आज का युग है जहाँ पंजाबी गायकों द्वारा तुम्बी को भुला दिया गया है और यदि कोई गायक तुम्बी वाद्य के साथ गाने का प्रत्यन करता है तो उसे पॉप-गायकों, जितनी प्रसिद्धि प्राप्त नहीं होती। यह कारण है कि आज का गायक तुम्बी वाद्य को छोड़कर पॉप-संगीत की ओर आकर्षित हो रहे है जिसमें पश्चिमी वाद्यों का अत्यधिक स्पुट देखने को मिलता है।[5]

तुम्बी के विलुप्तीकरण में सुधार सम्बन्धी सुझाव:

1. युवावर्ग किसी भी विरासत को बढ़ाने में अहम भूमिका निभाते है उनसे अनुरोध है कि वो विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों तथा अन्य सेवी संस्थाओं के माध्यम से तेजी से बढ़ते हुए पश्चिमी संगीत के प्रभाव को कम करने का प्रयास करें तथा अपने लोकसंगीत एवं लोक-साजों से संगीत-प्रेमियों एवं जनसाधारण को परिचित करवाएँ।
2. विद्यालयों, महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों के प्रोफेसर से भी अनुरोध है कि वे समय-समय पर लोक संगीत से सम्बन्धित कार्यशालाओं का आयोजन करवाएँ एवं संगीत विद्यार्थीयों को इस वाद्य से अवश्य परिचित करवाएँ एवं उनसे मेरा विनम्र निवेदन है कि विद्यालय स्तर पर ऐसे कलाकारों को बुलाया जाए जो लुप्त होते लोक संगीत एवं लोक साजों से युवा पीढ़ी को परिचित करवाएँ।

तुम्बी वाद्य के विलुप्तीकरण में सुधार सम्बन्धी किए जाने वाले कार्य:-

तुम्बी वाद्य के विलुप्तीकरण के सुधार सम्बन्धी पहला कार्य ''पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला द्वारा किया गया है वहाँ के कला-विभाग में ''लोक-संगीत का डिप्लोमा शुरू किया गया है जिसमें विद्यार्थीयों को पंजाब के लोक-गीत, लोक-नाच और लोक-वाद्यों से सम्बन्धित शिक्षा प्रदान की जाएगी।

इसी विषय में एक महत्त्वपूर्ण कार्य ''गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर, द्वारा शुरू किया जा रहा है जिसकी जानकारी मुझे विश्वविद्यालय के ''संगीत विभाग में कार्यरत ''डॉ. राजेश शर्मा (प्रोफेसर) जी से प्राप्त हुई उनके विश्वविद्यालय द्वारा भी संगीत विभाग में लोकसंगीत का डिप्लोमा शुरू किया जा रहा है जो एक अहम कदम है अपने पंजाबी लोक-संगीत, लोक-गीत एवं लोक-साजों को संगीत-प्रेमियों एवं जनसाधारण तथा युवा वर्ग को परिचित करवाने का।[6]

निष्कर्ष:-

उपरोक्त चर्चा के निष्कर्ष फलस्वरूप लेखक यही कहना चाहती है कि चाहे कोई भी विषय हो उसे लोकप्रियता युवा-पीढ़ी द्वारा ही प्राप्त होती है और पंजाब के युवा गायक ही हैं जो पुन: तुम्बी वाद्य को प्रसिद्धि दिलवाएँगे और एक ऐसे शिखर पर ले जाएँगे जहाँ इसकी अनिवार्यता पुर्नस्थापित हो सकेगी। इस विषय पर शोध-पत्र प्रस्तुत करने का उदेश्य एक बार फिर से पंजाब की युवा पीढ़ी को लोक-गायकों, लोक-साजों एवं लोक-संगीत से जागरूक करवाना था। जिसे आज की पीढ़ी भूल चुकी है।

सन्दर्भ

1. गुरनाम सिंह, पंजाबी लोक संगीत विरासत भाग–2, पब्लिकेशन ब्यूरों, पंजाबी यूनिवर्सिट, पटियाला पृ. 359
2. साक्षात्कार श्री अमर नाथ अमर, शिष्य उस्ताद यमला जट्ट, 11 अक्तुबर 2017 समय सुबह 11 बजे
3. गुरनाम सिंह, पंजाबी लोक–साज, पंजाबी लोक संगीत विरासत पंजाबी लोक साज, प्रकाशक विभाग, गुरूनानक देव यूनिवर्सिटी, अमृतसर पृ. 50, 57
4. साक्षात्कार श्री हरिन्दर पतंगा, शिष्य उस्ताद यमला जट्ट, 02 सितम्बर 2017, समय दोपहर 4 बजे
5. साक्षात्कार, राजेश शर्मा, असिस्टेंट प्रोफेसर संगीत विभाग, गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर, 12 अक्तुबर 2017 समय दोपहर 1 बजे